पहचान

यह जो सड़क पर खून बह रहा है
इसे सूंघकर तो देखो
और पहचानने की कोशिश करो
यह हिन्दू का है या मुसलमान का
किसी सिख का या ईसाई का
किसी बहन का या भाई का।

सड़क पर इधर-उधर पड़े
पत्थरों के बीच में दबे
टिफिन कैरियर से
जो रोटी की गंध आ रही है
वह किस जाति की है?

क्या तुम मुझे सब बता सकते हो
इन रक्त सने कपड़ों,
फटे जूतों, टूटी साइकिलों,
किताबों और खिलौनों की कौम क्या है?
क्या तुम मुझे बता सकते हो
स्कूल से कभी न लौटने वाली
बच्ची की प्रतीक्षा में खड़ी
मां के आंसूओं का धर्म क्या है
और अस्पताल में दाखिल
जख्मियों की चीखों का मर्म क्या है

हां, मैं बता सकता हूं
यह खून उस आदमी का है
जिसके टिफीन में बंद
रोटी की गंध
उस जाति की है
जो घर और दफ़्तर के बीच
साइकल चलाती है
और जिसके सपनों की उम्र
फाइलों में बीत जाती है

ये रक्त सने कपड़े
उस आदमी के हैं
जिसके हाथ
मिलों में कपड़ा बुनते हैं
कारखानों में जूते बनाते हैं
खेतों में बीज डालते हैं
पुस्तकें लिखते, खिलौने बनाते हैं
और शहर की
अंधेरी सड़कों के लैम्प-पोस्ट जलाते हैं

लैम्प-पोस्ट तो मैं भी जला सकता हूं
लेकिन
स्कूल से कभी न लौटने वाली बच्ची की
मां के आंसुओं का धर्म नहीं बता सकता
जैसे
जख्मियों के घावों पर
मरहम तो लगा सकता हूं
लेकिन उनकी चीखों का
मर्म नहीं बता सकता

कुमार विकल

जिहाद की जरूरत

-गणेश शंकर विद्यार्थी

अब हालत इतनी नाजुक हो गई है कि बिना जिहाद के काम चलता नहीं दिखाई देता। धर्म का नाम लेकर घृणित पाप के गड्ढे खोदने वालों की संख्या घृणित रक्त-बीज की तरह बढ़ रही है। पहले भी समाज में धर्मढोंगी रहे हैं। हमेशा से वे रहते आये हैं। मनुष्य न तो कभी पूर्ण निभ्रांत था और न अभी शायद बहुत दिनों तक वह इस अवस्था को प्राप्त होगा ही, लेकिन समाज में कुछ ऐसे गुण आते हैं, जिनमें मिथ्या धर्म और परिपाटी की भावना बहुत बलवती और देशव्यापिनी हो जाती है। ऐसे ही अवसरों पर हाथ में तलवार लेकर निकल पड़ने की जरूरत होती है। जब तक लोग धर्म की दुहाई दे-दे कर पाप की खड्डु-खाई जीवन की, व्यक्तिगत जीवन की, संकरी गलियों में खोदते रहते हैं, तब तक तो समाज के विचारशील पुरुष विशेष चिंता नहीं करते, परंतु जब सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के राजमार्ग पर धर्म की कुदाली, पाप और पामरता के गर्त खोदने लगती है, तब देश के कुछ हृदय अधिक व्याकुल और चिंतित हो जाते हैं।

जीवन अनमिल एवं विच्छिन्न भेदभावों की पेटारी नहीं है, जो बात आज व्यक्तिगत जीवन में घटित होती है, वही कल समाज के तरल वक्षस्थल पर उतराने लगती है। भारतवर्ष का विशाल इतिहास इसका साक्षी है। वैदिकी हिंसा की भावना पहले व्यक्तिगत यज्ञ-यागादिक क्रियाओं में सन्निविष्ट थी, धीरे-धीरे वह समाज-व्यापिनी हो गयी। गंगा, यमुना, सरस्वती और पंचनद की भूमि एक विशाल हत्यागृह में परिणत हो गयी, जिसे कुछ व्यक्ति बरसों तक अपनी वैयक्तिक हैसियत से करते रहे, उसे कल सारा का सारा समाज करने लग गया। इस समय जिहाद की जरूरत महसूस हुई। समाज की आत्मा कांपी। पाखंड का विच्छेद करने के लिए एक खड्ग-हस्त महात्मा की मांग हुई और न जाने किस उदारदानी ने देश की यह मुंहमांगी मुराद पूरी की, भगवान बुद्धदेव का अवतार हुआ। मानो हत्या और हिंसा की ज्वाला को बुझाने के लिये नील जलद का हृदय फट पड़ा फ़िर इसी प्रकार सदियां गुजरीं। आत्मा के मंथन की जो क्रिया भगवान बुद्धदेव ने बतलाई थी, वह मंद हो चली। खांड़े की धार कुंद हो गयी। उस पर जंग चढ गया। और खड्ग को कुंद होता देख पाप ने अपने बीज बोये और उसका पौधा उगा और उसकी बेल फ़ैली और फ़िर जिहाद की जरूरत महसूस हुई। वही क्रिया। कैसा अद्भुत चक्र! फ़िर-फ़िर कर उसकी परिधि में पैर पड़ने लगता है। कुछ बौद्ध भिक्षु, पहले चोरी-चुपके वासना-तृप्ति का साधन ढूंढने लगे। व्याधि फैली। एक संघ से दूसरे संघ में और दूसरे से तीसरे में और फिर सारे देश भर में धर्म के नाम पर पाप के गड्ढे खोदे जाने लगे। फ़िर समाज कुनमुनाया। जिहाद हुआ। स्वामी शंकराचार्य पधारे। वेदांत धर्म का रूप स्थापित किया गया। पर, समाज स्थिर नहीं रहता। जीवेश्वरेक्य के सिद्धांत की छीछालेदर की गयी। 'अहंब्रह्मस्मि' का दुरूपयोग होने लगा। उच्चतम आध्यात्मिक सत्यता और साधना का व्यवहार में ऐसा निकृष्ट उपयोग हुआ कि समाज फ़िर तिलमिलाया। तब विशिष्टद्वै, द्वैत आदि मन का प्रतिपादन हुआ। सूखा ज्ञान भक्ति के रंग में रंगा। उदाहरण कहां तक दें? भारतवर्ष के इतिहास का यह अत्यंत विस्तृत पृष्ठ जो चाहे खोल के देख ले। प्राणांत की बेला में जिस तरह प्राणों का पुन: संचार हमारे समाज के अस्थिपंजर में किया गया है, वह प्रत्येक अन्वेषक की निगाह में पड़ जायेगा। नानकदेव, कबीर, गुरू गोविंद सिंह और इनके पहले रामानुज, मध्वाचार्य, वल्लभ आदि आचार्यों का आविर्भाव इसी एक आवश्यकता की पूर्ति के लिये हुआ। इस युग में राममोहन और दयानंद अपने खांड़ों की धार का प्राबल्य आज तक हमें दिखा रहे हैं। यह सच है। पर, इस समय हमारी आवश्यकताएं एक विशेष प्रकार की हैं। हम अपनी धार्मिक चारदीवारी में बंधे हुए अपने आस-पास के तमाम संसार को भुलाये बैठे हैं। आज हमें जिहाद करना है-इस धर्म के ढोंग के ख़िलाफ़, इस धार्मिक तुनुकमिजाजी के खिलाफ़। जातिगत झगड़े बढ़ रहे हैं। खून की प्यास लग रही है। एक-दूसरे को फूटी आंखों भी हम देखना नहीं चाहते। अविश्वास, भयातुरता और धर्मांडबर के कीचड़ में फंसे हुए हम नारकीय जीव यह समझ रहे हैं कि हमारी सिर-फुड़ौवल की लीला से धर्म की रक्षा हो रही है। हमें आज शंख उठाना है उस धर्म के विरुद्ध जो तर्क, बुद्धि और अनुभव की कसौटी पर ठीक नहीं उतर सकता। सहारनपुर में झगड़े का आसन्न कारण क्या था? यही न कि पीपल की एक डाली अलम के झंडे में अड़ती थी। पामर! ढोंगी! पशु! किस धर्म के किस तर्क और बुद्धि के बल पर हम पीपल की डाली को अकाट्य और अछेद्य समझें? क्या किसी धर्म में ऐसा लिखा है? और यह परिपाटी, यह बाबा वाक्य ही क्या धर्म है? ऐसे धर्म का नाश, सर्वनाश, होना चाहिये। मूर्ख जाहिल मुसलमान अलम के झंडे को जब तक एक हजार फीट का इतना ऊंचा कि वह सातवें आसमान की छत से जाकर टकराए-न बनायेंगे, तब तक उनका धर्म नहीं निभेगा, क्यों? इस बेहूदगी का, इस नीचता का भी कुछ ठिकाना है? और इन्हीं बातों में सिर फूटें! हमें क्या हो गया है? हिंदू लोग अपनी छाती पर दकियानूसी रस्मो-रिवाज का पत्थर रखे बैठे हैं। वे समझते हैं कि हम धर्म की रक्षा कर रहे हैं। यदि आज साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण भी आकर हम धर्मढोंगियों को समझायें कि जो कुछ हम कर रहे हैं-विधवाओं, अछूतों, विवाहादि संस्कारों, जाति-पांति के पाशविक अस्वाभाविक बंधनों आदि को अलंघ्य संस्थाओं का रूप देकर हम जिस धर्म की रक्षा का पाखंड रचते रहे हैं-वह वास्तव में धर्म नहीं, अधर्म और महान अधर्म है, तो भी हमें विश्वास है कि हम उनकी बात न मानेंगे। उसके प्रतिकूल हम अपनी छाती पर रखे हुए पत्थर को इस रूढि-पूजा की शिला को और अधिक दुलार से चिपकाएंगे और शायद रोकर कहेंगे, 'अरे, मेरे अच्छे शिलाधर्म! मैं तुझे न छोड़ूंगा।' जब अवस्था ऐसी हो रही है तब भला धर्म के ढोंग के विरुद्ध जिहाद न छेड़ा जाये तो और क्या हो! मस्जिदों के सामने बाजा न बजाओ, क्योंकि इबादत में खलल पड़ता है। बंगाल में ऐसा कभी नहीं हुआ। मस्जिदों के सामने न तो कोई 'हरि बोल' की ध्वनि कर सकता और न 'रामनाम' की। वहां यह रिवाज है। मिस्टर गजनवी अब यह एक नया शिगूफ़ा छोड़ रहे हैं। हम पूछना चाहते हैं कि यह सब जो हो रहा है, अथवा बंगाल में, यह मानकर भी कि उनका कथन सत्य है, जो कुछ होता रहा है, क्या वह धर्म की रूह से जायज है? क्या इस बाजे-गाजे और हरि बोल रोकने-रुकवाने ही में धर्म है? हम इस धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध जिहाद छेड़ना चाहते हैं। हम न तो ऐसे धर्म को धर्म कहते हैं और न ऐसी मूर्खता को धर्म-स्नेह के नाम से पुकारने को तैयार हैं। चाहे हिंदू हों या मुसलमान, यदि वे अपने वाक्यों को तर्क, बुद्धि और अनुभव-ज्ञान के बल पर पुष्ट नहीं कर सकते तो हम उन कार्यों को ढकोसला कहेंगे।

भारतवासियो! एक बात सदा ध्यान में रखो। धार्मिक कट्टरता का युग चला गया। आज से 500 वर्ष पूर्व यूरोप जिस अंधविश्वास, दम्भ और धार्मिक बर्बरता के युग में था, उस युग में भारतवर्ष को घसीट कर मत ले जाओ। जो मूर्खताएं अब-तक हमारे व्यक्तिगत जीवन का नाश कर रही थीं, वे अब राष्ट्रीय प्रांगण में फैल कर हमारे बचे-खुचे मानव-भावों का लोप कर रही है। जिनके कारण हमारा व्यक्तिव पतित होता गया, अब उन्ही के कारण हमारा देश तबाह हो रहा है। हिंदू-मुसलमानों के झगड़ों और हमारी कमजोरियों को दूर करने का केवल एक यही तरीका है कि समाज के कुछ सत्यनिष्ठ और सीधे दृढ विश्वासी पुरुष धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध जिहाद शुरू कर दें। जब तक यह मूर्खता नष्ट न होगी, तब तक देश का कल्याण न होगा। समझौते कर लेने, नौकरियों का बंटवारा कर लेने और अस्थायी सुलहनामों को लिखकर हाथ काले करने से देश को स्वतंत्रता न मिलेगी। हाथ में खड्ग लेकर, तर्क और ज्ञान की प्रखर करवाल लेकर, आगे बढने की जरूरत है। जिन हाथों में शक्ति है, उनसे हम यह पुण्य कार्य आरंभ करने का अनुरोध करते हैं। एक ऐसे संघ के बनने की आवश्यकता है जो किसी की लगी-लिपटी न कहे, जो सदा सत्य पर अटल रहे। मुक्ति का मार्ग यही है। पाप के गड्ढे राष्ट्र के राजमार्ग पर खोदने नहीं चाहिये, क्योंकि भारत की राष्ट्रीयता का रथ उस पर होकर गुजर रहा है। हम चाहते हैं कि कुछ आदमी ऐसे निकल आवें जिनमें हिंदू भी हों और मुसलमान भी जो कि इन सब मूर्खताओं को, जिनके हिंदू और मुसलमान दोनों शिकार हो रहे हैं, तीव्र निंदा करें। यह निश्चय है कि पहले-पहल इनकी कोई न सुनेगा। इन पर पत्थर फेंके जायेंगे। ये प्रताड़ित और निंदा-भाजन होंगे। पर, अपने सिर पर सारी निंदा और सारी कटुता को लेकर जो आगे आना चाहते हैं, उन्हीं को राष्ट्र यह निमंत्रण दे रहा है। सीस उतारै भुईं, ता पर राखै पाव, ऐसे जो हों वे ही आवें।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207